अब घर चलना है

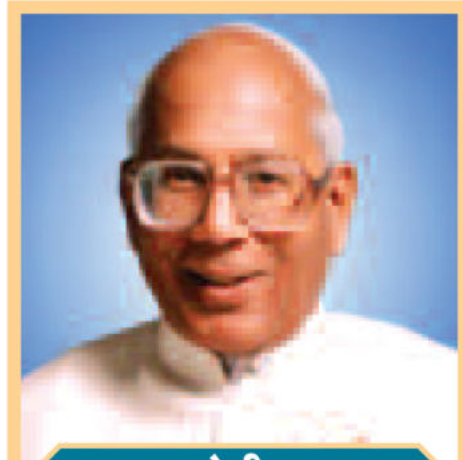

राजयोगी ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

आज हम जिस-किसी भी मनुष्य के सम्पर्क-सम्बन्ध में आते हैं, हम देखते हैं कि उसे कई प्रकार की हथकड़ियाँ लगी हुई हैं, उसकी टाँगों में कई प्रकार की बेड़ियाँ पड़ी हुई हैं, इससे भी वह ज़्यादा बन्धनों में पड़ा हुआ है क्योंकि हथकड़ियों में पड़ा हुआ व्यक्ति यदि चाहे तो स्वतन्त्र चिन्तन तो कर ही सकता है परन्तु जिसके चिंतन को ही हथकड़ियाँ लगी हुई हों, वैचारिक स्वतन्त्रता से रहित वह व्यक्ति तो ऐसा कैदी है कि जिसकी तुलना नहीं। आज मनुष्य की ऐसी ही स्थिति है। वह कई प्रकार के लगाव और झुकाव या मन-मुटाव की जंजीरों में जकड़ा हुआ है। उसके व्यवहार और उसकी बातचीत से यह स्पष्ट झलक मिलती है कि वह किसी बन्धन में बन्ध कर बातचीत या व्यवहार कर रहा है। मालूम होता है कि उसके दिमाग पर कोई सवार है, उसे गधा, घोड़ा, खच्चर या ऊंट बना कर चला रहा है। किसी का मन किसी वस्तु रूपी खूंटे से बंधा है और बंधा होने के कारण वह वहाँ से आगे नहीं चल सकता तो अन्य किसी देहधारी में उसका मन अटका हुआ है और वह भी उस दलदल से निकल नहीं पाता। कभी-कभी उसे क्षण-भर के लिये यह महसूस भी होता है कि 'ये सभी व्यर्थ ही के लगाव-झुकाव रूपी बन्धन हैं, इन्हें तोड़ देने में ही मेरी भलाई और मुक्ति है' परन्तु फिर भी उसके मन पर जो व्यक्ति या वस्तु हावी है, वे उसे मीठी सलोनी पुचकार देकर अपने पाशों में बाँधे रखते हैं।

मनुष्य ने 'नष्टोमोहः' का आदेश-उपदेश सुन तो रखा है और विचारक, प्रचारक तथा सुधारक लोग दूसरों को इसका पाठ पढ़ाने में भी लगे रहते हैं परन्तु वास्तव में मनुष्य मोह-माया को नष्ट नहीं कर रहा बल्कि मोह-ममता उसे नष्ट कर रहे हैं। किसी में किसी व्यक्ति के प्रति मोह नहीं है तो महिमा और उपाधि में मोह है। अन्य किसी का घर और घर वालों में मोह नहीं है तो अपने आश्रम और अनुचरों में मोह है। राजा जनक के दरबार में एकत्रित सन्यासियों की तरह किसी का अपनी लंगोटी, सोटी या अंग वस्त्र और अंगोछे में मोह है। इस मोह ने तो मनुष्य के विवेक को नष्ट कर दिया है। इसके परिणामस्वरुप वह एक से पक्षपात और दूसरे से अन्याय करता है और बताने तथा समझाने पर भी मोह-ममता की फाँसी या फंदे को नहीं छोड़ता है।

आज 'लोक-सेवा' का नाम लेकर भी लोग अपने स्वार्थ सिद्ध करने में लगे रहते हैं। वे धन-दौलत इकट्ठा न भी करें तब भी सत्ता, स्थान और यश-कीर्ति के प्रलोभन में तो पड़े ही रहते हैं। अधिकार के अहंकार में तो उन्हें मज़ा आता है जिसके परिणामस्वरुप वे दूसरों को मज़ा चखाने में लगे रहते हैं। तन, मन, धन से सहायता देने वाले, योग से सहयोग देने वाले, कर्मठ होकर ठोस सेवा करने वाले तो और लोग होते हैं परन्तु यश की इच्छा वाले व्यक्ति 'लोक-सेवा' का नारा लगाकर, मान-शान और साधन-सामग्री के मोह की सीढ़ी से अहंकार पर पहुंचकर अन्धकार में पड़ जाते हैं। हर वर्ग में, हर कार्य-क्षेत्र में ऐसे बहुत से लोग होते हैं जो दूसरों से काम कराके और दाम दिलाकर नाम और इनाम अपने लिये बटोरते हैं और उन्हीं द्वारा सत्ता हथिया कर उन्हीं पर हुकूमत करते हैं।

इच्छाओं के गुलाम

इसी प्रकार, व्यक्ति के मन में अनगिनत इच्छायें और तृष्णायें हैं। उनके कारण वह ख्याली पुलाव बनाता रहता है। वह यों ही उन इच्छाओं का गुलाम बनकर स्वयं को छका देता है और अपने जीवन के मूल्यवान क्षण रुपी हीरे-मोती गंवा देता है और अन्त में जब उसका शरीर चेतना-विहीन होकर लकड़ी की अर्थी (किंवा अर्थी) पर पड़ा होता है, तब लोग जो जीवन-भर अपने स्वार्थ के खेल-तमाशे करते रहते थे और उसे हैरान, परेशान, नादान और बेवफूफ बनाने में लगे रहते थे, "राम नाम सत्य है; सत्य बोलो गति है" कहकर दिखावे को विलाप करते हैं। इच्छाओं रुपी बे-लगाम घोड़ों पर चढ़ना तो मनुष्य तब भी नहीं छोड़ता।

लफड़ों से आज़ाद

धन्य हैं वे थोड़े से व्यक्ति जिनकी बुद्धि इन बातों या लफड़ों से आज़ाद होती है। उनका ही जीवन बड़ा हल्का और सुखमय होता है। वे ही सभी प्रकार की गुलामी की जंजीरों से छूटे हुए होते हैं। वे किसी के दबाव, लगाव, झुकाव और धमकाव में न आकर अपनी वैचारिक स्वतन्त्रता के धनी होते हैं और स्वयं प्रभु द्वारा बताये मार्ग पर बे-खटके चलते हैं। उनका जीवन सच्चे अर्थ में 'अन्तः सुखाय' और 'बहुजन हिताय' होता है।

परन्तु प्रश्न उठता है कि हमारा जीवन इन सभी लफड़ों से फारिग कैसे हो? हम उधेड़बुन के धन्धे से छूटें कैसे? गुलामी, सलामी, गुमनामी, नीलामी और बदनामी के चक्कर-फेर से हम निकलें कैसे? दलदल के दाग-घावों को धोकर हम नये-नवेले बनें कैसे? खुद-मस्ती में, नारायणी नशे में, ईश्वरीय आनन्द में झूमें और झूलें कैसे? राहत के साँस और सच्चे सुख का साधन पायें कैसे?

अब घर चलना है

ज्ञान तो अथाह है परन्तु इसके चार शब्दों में इसका सार भरा हुआ है - "अब घर चलना है" – इनमें से 'अब' शब्द समय का, 'घर' शब्द 'स्थान' अथवा ठिकाने का, 'चलना' शब्द पुरुषार्थ का अथवा लक्ष्य का तथा गति का और 'है' शब्द स्मृति, स्वीकृति, निश्चय और अस्तित्व का वाचक है। 'घर' वह है जहाँ शिवबाबा रहते हैं और जहाँ से यह आत्मा इस परदेस में आई है। अतः इस शब्द से आत्मा, परमात्मा और परलोक की स्मृति आयेगी। शिवबाबा की याद कायम होगी, निराकारी स्थिति होगी, पाँव पृथ्वी के ऊपर उड़ जायेंगे और आत्मा फरिश्ता बन उड़ती कला में चली जायेगी तथा स्वयं को प्रकाश के लोक में लाइट अनुभव करेगी। इससे उसकी स्थिति कर्मातीत हो जायेगी। 'अब' शब्द की स्मृति से बीती को बीता समझेंगे और 'घर' शब्द से विकारी दुनिया को 'न जीती' समझेंगे। 'अब' शब्द के प्रभाव से पिछले संस्कारों को एक ओर रख, अब हमें जो कुछ करना है, उसकी बात सोचेंगे। 'अब' शब्द की याद आने से हम टाल-मटोल छोड़ देंगे और आज की बात कल पर नहीं छोड़ेंगे बल्कि इसी क्षण से ही आगे बढ़ना शुरू कर देंगे। 'चलना है' शब्दों से 'आलस्य और अलबेलापन' भाग जायेगा। हम कर्त्तव्य कर्म करने में लग जायेंगे और समय रूपी धन को व्यर्थ न गंवा कर हम ज्ञान-धन और योग-बल को अर्जित करने में लग जायेंगे। 'है' शब्द से हम निश्चय-बुद्धि बनेंगे और "करना है जो अभी कर लो यह वक्त जा रहा है" – इस उक्ति के अनुसार वर्तमानकाल में पुरुषार्थ करने लग जायेंगे। इस प्रकार के निरन्तर पुरुषार्थ से हमारी अवस्था कर्मातीत, बिन्दु स्वरूप अथवा बीजरूप हो जायेगी और शक्तिशाली बन जायेगी।

शांतिवन-राज.। श्रीमद्भगवद्गीता महासम्मेलन के दौरान शांतिवन में आये केरल के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान को ओम शान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. दिलीप राजकुले।

भुसावर-भरतपुर(राज.)। एसडीएम हेमराज गुर्जर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. गीता बहन व ब्र.कु. संस्कृति बहन।

बस्ती-उ.प्र.। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सुभाष जी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. गीता बहन तथा ब्र.कु. सविता बहन।

सिसवा बाज़ार-उ.प्र.। एसडीएम भावना सिंह खड्डा,कुशीनगर को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात व प्रसाद देते हुए ब्र.कु. मनोज बहन तथा ब्र.कु. किरण बहन।

भुवनेश्वर-बीजेबी नगर(ओडिशा)। अरुण कुमार मोहंती,ज्वाइंट डायरेक्टर विजिलेंस एवं उनके परिवार को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. तपस्विनी दीदी।

अयोध्या-उ.प्र.। अरविंद आश्रम के साधक धर्मेन्द्र कुमार एवं साधिका बहन को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् ओम शान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. सुधा बहन और ब्र.कु. उषा बहन।

बारां-राज.। आज़ादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज़ के प्रशासनिक सेवा प्रभाग द्वारा बारां कलेक्टर ऑफिस में आयोजित 'प्रशासन में उत्कृष्टता के लिए आध्यात्मिकता' विषयक कार्यक्रम में प्रभाग के मुख्यालय संयोजक ब्र.कु. हरीश भाई तथा ब्र.कु. बहनें उपस्थित रहे।

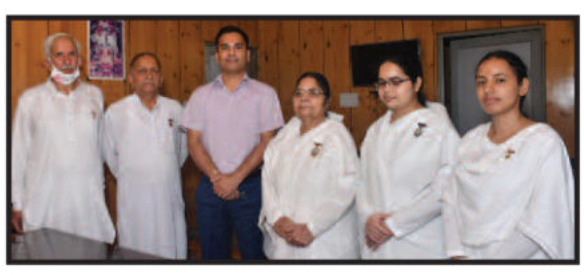

धर्मशाला-कांगड़ा(हि.प्र.)। एडिशनल डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट रोहित राठौर को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में साथ हैं ब्र.कु. कमलेश दीदी तथा अन्य ब्रह्माकुमारी भाई-बहनें।

जयपुर-बनी पार्क(राज.)। ब्रह्माकुमारीज़ के स्पोर्ट्स विंग द्वारा राष्ट्रीय खेल दिवस पर भारतीय खेल प्राधिकरण,विद्याधर नगर स्टेडियम जयपुर में राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ियों एवं कोचेज़ को सम्मानित किया गया। इस मौके पर ब्र.कु. लक्ष्मी दीदी, ब्र.कु. कुणाल भाई, ब्र.कु. वर्षा बहन, एथलीट कोच सुमित ढाका तथा खेल जगत से जुड़े भाई-बहनें मौजूद रहे।

शिमला-हि.प्र.। मातृवन्दना संस्थान हिमाचल प्रदेश द्वारा शिमला के टुटीकंडी वार्ड के गीता नगर में आयोजित पौधारोपण कार्यक्रम में भारतीय पुलिस सेवा से सेवानिवृत्त आईजी एवं राष्ट्रपति पुलिस सेवा पदक से सम्मानित हिमांशु मिश्रा तथा ब्रह्माकुमारीज़ शिमला सिटी सेवाकेन्द्र की मुख्य संचालिका ब्र.कु. सुनीता मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। इस मौके पर सौ लोग उपस्थित रहे एवं सभी ने पौधा रोपण किया।